शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बदलते समाजीकरण में बच्चों पर इंटरनेट का प्रभाव

संध्या बघेल
स्कूल ऑफ़ सोशल साइन्स
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

बच्चों की शैक्षणिक यात्रा में आज कंप्यूटर व इंटरनेट, सूचनातंत्र व मनोरंजन के स्रोत के रूप में दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है। आधुनिक युग में माता-पिता भी बच्चों के लिए इंटरनेट की उपयोगिता समझते हैं। वहीं इसके दुष्प्रभाव से अभिभावक चिंतित है। क्योंकि इन्टरनेट की कोई सीमा नहीं होती। अनगिनत साइट खोली जा सकतीहैं। इंटरनेट और साइबर कल्चर के कुछ दोष भी है- हिंसा, अश्लीलता, नशा परोसती साइट अल्प आयु वर्ग के बच्चों के बौद्धिक विकास व प्रत्यक्ष संवाद को बाधित करती है। आज मुंबई दिल्ली, जैसे शहर में मां-बाप अपने इंटरनेट व्यसनी बच्चों को क्लिनिक लेकर पहुंच रहे हैं। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि इंटरनेट उन्मुख सोसायटी में हमारे प्रत्यक्ष संवाद क्यों दम तोड़ रहे हैं ? शारीरिक मनोरंजन क्रियाओं से बच्चे क्यों विमुख हो रहे हैं ? पठन-पाठन की तुलना में इन्टरनेट की सोशल वेबसाइट के संवाद क्यों प्रभावी हो रहे है ? इसके किस तरह रोका जा सकता है यह जानने की कोशिश की गई है।

प्रस्तावना

बच्चों की शैक्षणिक यात्रा मे आज कम्प्यूटर उनका हम सफर बन गाया है। सूचनाओं के अथाह भंडार और मनोरंजन के स्रोत के रूप में इंटरनेट बच्चों के लिए उनके दैनिक जीवन का हिस्सा है। आज यह बात सही है कि आधुनिक युग में माता-पिता बच्चों के लिए इंटरनेट की उपयोगिगता को समझ रहे है , वहीं इन्टरनेट के अधिक उपयोग से होने वाले दुष्प्रभाव से भी बच्चों के अभिभावक चिंतित हैं। इंटरनेट पर किसी तरह की कोई सीमा नहीं होती। यहाँ कई तरह की अनगिनत वेब साइट खोली जा सकती हैं। इंटरनेट की ये विशेषता लाभदसयक भी है और हानिकारक भी। आज के बच्चे जहां बड़ी आसानी से इंटरनेट-फ्रेंडली हो रहे हैं , वहीं वे अनजाने में कई प्रकार के दुष्प्रभावों के वशीभूत हो जाते हैं।

इस संबंध में इंटरनेट और साइबर कल्चर के कुछ दोष भी हैं। बच्चे अनजाने में इंटरनेट पर कई सारी व्यक्तिगत जानकारी दे देते हैं। टीन एजर्स इस तरह बहुत सी गोपनीय बातें भी कई तरह के प्रलोभन के चलते नेट पर शेयर कर देते हैं। इसके अलावा नेट पर अनपेक्षित साइट्स निश्चित रूप से अल्प आयु वर्ग के बच्चों के बौद्धिक विकास को बाधित करती है। इंटरनेट के इन दुष्प्रभावों ने आज बच्चों के अभिभावकों को चिंता में डाल दिया है। वर्तमान में इंटरनेट की बढती लोकप्रियता व सम्मोहन ने विदेश के साथ-साथ देश में भी बच्चों व युवाओं को तेजी से अपनी पकड़ में ले लिया है।

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हाल ही में ग्रेट ब्रिटेन में किए गए दो सर्वेक्षणों से ज्ञात होता है कि वहां माता-पिता का अपने बच्चों से संवाद इंटरनेट के माध्यम से ही होता है एवं वहां 12 वर्ष से 14 वर्ष के बीच के लगभग 40 प्रतिशत बच्चे मोबाईल अथवा कंप्यूटर के जरिये अश्लील साहित्य के साथ में महिला की तस्वीरें दोस्तों के बीच बिना रोक-टोक के भेज रहे हैं।

भारत में नेट सर्फिंग की लत अधिकांश युवाओं एवं बच्चों को लग चुकी है। नेट सर्फिंग की इस लत ने सामाजिक संघ व प्रत्यक्ष संवाद को काफी हद तक प्रभावित किया है। मुंबई में ऐसे कई इंटरनेट एडिक्टेड क्लीनिक की शुरुआत भी हो गई है जहां दर्जनों मां-बाप अपने बच्चों को लेकर ऐसे क्लीनिक पर लगातार पहुंच रहे हैं। इंटरनेट प्रयोग के मामले में भारत एशिया में तीसरा तथा विश्व में चौथा देश है। साथ ही इंटरनेट प्रयोग करने वाली 85 फीसदी आबादी यहों 14 से 40 वर्ष के बीच है। इस संदर्भ में सामाजिक तथ्यों से पता चलता है कि आज कंप्यूटर व इंटरनेट की दुनिया बच्चों मे परिवार , स्कूल व क्रीडा समूह जैसी प्राथमिक संस्थाओं की उपादेयता पर प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं।

इंटरनेट के बढते उपयोग ने आज संवाद के लिए शारीरिक श्रम को खत्म-सा कर दिया है। फेसबुक, ट्विटर व वाटसेप के सामने हमारे दिमाग को तरोताजा रखने वाली स्वास्थ्य क्रियाएं हमारे प्रत्यक्ष सामाजिक जीवन से गायब होती जा रही हैं। विद्यालयों में पठन-पाठन की क्रिया व शिक्षक की तुलना में इंटरनेट की सोशल वेबसाइट से संवाद प्रभावी क्यों हो रहा है ? यह दौर ज्ञानाश्रित सूचना क्रांति का है। निश्चित ही सूचनाओं के तकनीकी संवाद ने परिवार व उसकी सामूहिकता को विखंडित करके बचपन को सबसे अधिक प्रभावित किया है।

आज मां-बाप को इतनी फुरसत ही नहीं है जो उसे यह बता सके कि समाज का उसके जीवन में क्या महत्व है तथा उसके सामाजिक जीवन चयन करने की दिशा क्या होगी ? बच्चों के जीवन में सांस्कृतिक मूल्यों की सीख देने वाले परिवार और स्कूल तक उनके बचपन से दूर हो रहे है। बच्चों का बचपन मनोरंजन व शारीरिक खेलकूद से हटकर संचार माध्यमों की दुनिया तक सिमट रहा है। एक कडवी सच्चाई यह भी है कि परिवारों से बुजुर्ग तो निकल गए हैं। मां-बाप भी अब बच्चों के बचपन से अनुपस्थित हो रहे हैं। ऐसे अकेले वातावरण में संचार माध्यम कहीं ऐसे माध्यम बनते हैं जिनसे बच्चे अपने मनोरंजन की चीजों के चयन के लिए स्वतंत्र हो जाते हैं।

कम्प्यूटर व इंटरनेट की दुनिया की विशेषता यह है कि ये बच्चों के सामूहिक व मानवीय संवेदनाओं के पक्ष को गायब करके उसके निहायत काल्पनिक , स्वकेन्द्रित व रोमांचक उत्तेजना देने वाले पक्ष को ज्यादा प्रभावी बना देते हैं। चूंकि बच्चों के सामाजीकरण करने वाले परिवार व स्कूल जैसी प्राथमिक संस्थाएं भी बाजर की जकड में हैं। इसलिए बच्चे भी सांस्कृतिक शून्यता के दौर से गुजर रहे हैं। बचपन का सही निवेश जीवन भर मानवीय संवेदनाओं की संभाल कर सकता है।

वर्तमान का सच यह है कि दैहिक सामाजीकरण का अभाव और मीडिया, कम्प्यूटर व इंटरनेट के यांत्रिक संवादों की प्रचुरता बच्चों के बचपन को विवादास्पद बना रही है। बच्चों के जीवन में व्यसन के रुप में विकसित हेा रहा उत्तेजना का

यह स्थायी भाव कभी बाल-हिंसा के रूप में सामने आता है तो कभी आत्महत्या के रूप में। अब 21वीं सदी में नेट के नागरिकों का समाज बन रहा है। इस समाज में पारस्परिकता , प्रेम, बंधुत्व, मनुष्यता, सहानुभूति व मानवीय संवेदना जैसे सनातन मूल्यों का अभाव-सा दिखाई दे रहा है। इनके अभाव में सबसे अधिक प्रभावित होने वाला बच्चों का बचपन ही है। बच्चों की इस पीढी में सफलता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा है , परन्तु जीवन में सफल होने का धैर्य व संयम की मात्रा नहीं है।

सुझाव

बच्चे इंटरनेट का उपयोग करें यह भी जरुरी है , लेकिन वे इसके बुरे प्रभाव से बचें इसके उपाय भी जरूरी है। बच्चे इंटरनेट के आदी न हो जाएं,सूचनाओं के विशाल भंडार में से बच्चे वही चुनें जो उनके सकारात्मक विकास में सहायक हो, यह ध्यान रखना भी आवश्यक है। आज के समय में माता-पिता ही बच्चों को सही जानकारी दे सकते हैं। बच्चे अनुपयोगी साइट न देखें, इसलिए माता-पिता को निम्न बातों को ध्यान रखना चाहिए :

इंटरनेट पर कई तरह के फिल्टरींग और और ब्लाकिंग सिस्टम भी हैं , जिसमें सुविधा है कि आप ऐच्छिक साइट्स ही खोल सकें और अनचाही एवं अनुपयोगी वेबसाईट्स सर्फिंग ही नकी जा सके। माइक्रोसाफ्ट इंटरनेट एक्सप्लोरर पर भी वही सुविधा उपलब्ध है कि आप अपेक्षित विषय पर आधारित साइट पर जा सके।

इंटरनेट कंटेंट रेटिंग एसोसिएशन का एक वेबसाइट रेटिंग सिस्टम है। इसके रेटिंग्स विकल्प का उपयोग कर आप जिस विषय से संबधित साइट्स चाहते हैं, उसकी सूची देख सकते हैं। इसके अलावा कई इंटरनेट फिल्टरिंग सॉफ्टवेअर हैं, जो अनुपयुक्त साइट्स को खुलने नहीं देते। फिल्टरिंग की सुविधा इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर भी प्रदान करते हैं, जिसका प्रयोग करना चाहिए। बच्चे उनुपयुक्त साइट न देखें, इसके लिए जरूरी है कि परिवार के बड़े लोग देखरेख करते रहें। वैसे तो छोटी आयु के बच्चों को माता-पिता अथवा अन्य किसी बड़े पारिवारिक सदस्य के साथ बैठकर ही सर्फिंग करानी चाहिए। बच्चे को नेट विशेषज्ञों के परामर्श से वेबाइट की एक सूची निर्धारित करनी चाहिए जो बच्चों के लिए आवश्यक और उपयोगी हो। बच्चों की संबंधी वेबाईट्स और सर्च इंजन के बारे में जानकारी के लिए कई तरह के स्रोत हैं। उदाहरण के लिए एमएसएन किड्स सर्च पर जाकर माता-पिता बच्चों के लिए अलग-अलग विषयों से संबंधित साइट्स के बारे में जानकारी जुटा सकते हैं। अभिभावक जब बच्चों को नेट सर्फिंग करते हुए देख नहीं पाते तो वे ब्राउजिंग हिस्ट्री में जाकर ये देख सकते हैं कि बच्चों ने कौन-कौन सी साइट्स सर्च की है। इस संबंध में बच्चों के साथ बैठकर बात भी करनी चाहिए और उन्हें समझाना चाहिए कि क्या सही है क्या गलत।

निष्कर्ष

बच्चे हमारे समाज व राष्ट्र का भविष्य हैं। इनके बचपन के वात्सल्य , प्रेम, दया व सहानुभूति के साथ अच्छा-बुरा , सच-झूठ व हिंसा-अहिंसा के बीच के अंतर के अच्छे भाव को जीवन में समाहित करने व गलत को जीवन से निकालने के कार्य मे परिवार व स्कूल जैसी प्राथमिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चों के जीवन से अनावश्यक रोमांच को हटाने के लिए आवश्यक है कि उनके एकाकीपन, तनाव, निराशा और कुंठा को कम करते हुए उनको रचनात्मक व शारीरिक गतिविधियों मे व्यस्त किया जाए।

बच्चों मे जज्बाती थकान व हिंसक उत्तेजना से जुडे भाव को माता-पिता और बच्चों के बीच बढे फासले को कम करते हुए एवं उनसे निकट का संवाद स्थापित करके कम किया जा सकता है। आज वैश्विक समाज के बढ़ते बाजार से बचाव मुश्किल है , परन्तु बच्चों से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करते हुए उनमें इंटरनेट की दुनिया से उभरने वाले एकाकीपन के स्थयीभाव को कम किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डाफ. गुप्ता विशेष - आभासी दुनिया में गुम बचपन, 2013 पृष्ठ 2

2. दास शिवम - बेसिक आफ कम्प्यूटर एण्ड इन्फार्मेशन टेक्नालाजी, नाकोडा पब्लिशर, इन्दौर

3. माथुर डॉ. एस.एस. शिक्षक तथा बहु-माध्यमों का शिक्षा में उपयोग, अग्रवाल पब्लिकेशन ,2011/2012 आगरा